KHAN GLOBAL STUDIES

The Most Trusted Learning Platform

संन्धि

निबंध	30 अंक
व्याकरण	30 अंक
वाक्य-विन्यास	25 अंक
संक्षेपण	15 अंक

7. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** के संधि-विच्छेद कीजिए और संधि के नाम भी बताइए :

1×5=5

[redacted]

(क) अत्यंत

(ख) इत्यादि

(ग) छात्रावास

(घ) गजानन

(ङ) तथागत

(च) दानवीर

(छ) जन्मांतर

(ज) धीरोदात्त

(झ) नारायण

(ञ) पदोन्नति

संधि किसे कहते हैं। → 3

वर्णों के मेल से उत्पन्न विकार को संधि कहते हैं; अर्थात् प्रथम पद का अन्तिम वर्ण तथा दूसरे पद का प्रथम वर्ण मिलकर उच्चारण व लेखन में परिवर्तन उत्पन्न करता है; जैसे

अधिक + आधिक = आधिकाधिक

अ + अ = आ

संधि और समास के अंतर को स्पष्ट कीजिए

मेल — संक्षेप

दो वर्णों के मेल से उत्पन्न विकार को संधि कहते हैं, जबकि दो या दो से अधिक शब्दों/पदों के मेल को समास कहते हैं जैसे -

चार आनन हैं जिसके - ब्रह्मा - समास

रत्न + आकर = रत्नाकर - संधि

- संधि का अर्थ क्या है उसके प्रकार कौन-कौन से हैं

संधि का शाब्दिक अर्थ मेल होता है; अर्थात् दो परस्पर वर्णों के मिलाव से उत्पन्न विकार संधि कहलाता है;

जैसे -

= संधि के तीन प्रकार निम्नलिखित हैं -

① स्वर
② व्यंजन
③ विसर्ग

विच्छेद किसे कहते हैं।

संधि द्वारा जोड़े गए शब्द को उसके मूल रूप में

परिवर्तित करना / अलग-अलग करना

संधि-विच्छेद कहलाता है ; जैसे -

संधि की विशेषताएं - 3

① → वर्णों का मेल

② → नए शब्द का सृजन

③ → अविकारी शब्दों के साथ प्रयुक्त नहीं

अविकारी
||
अव्यय

और
तथा
एवं

④ → संधि दो शब्दों के मध्य होती है

⇒ संधि के प्रकार / भेद बताइए

1. स्वर संधि → स्वर + स्वर
2. व्यंजन संधि → स्वर + व्यंजन, व्यंजन + स्वर, व्यंजन + व्यंजन
3. : विसर्ग संधि
   - विसर्ग + स्वर
   - विसर्ग + व्यंजन

:प्राप + :

⇒ संयोग किसे कहा जाता है?

एक शब्द का अन्तिम वर्ण तथा दूसरे शब्द का एक वर्ण के मेल से लेखन और उच्चारण में कोई परिवर्तन नहीं होता; जैसे-

मानव + ता = मानवता

अन्तर + देशीय = अन्तर्देशीय

स्वर संधि

संधि के तीन भेदों में से एक, जहाँ स्वर के साथ स्वर का परस्पर मेल से उत्पन्न विकार को स्वर संधि कहते हैं;

जैसे →

स्वु + आगत = स्वागत

परिभाषा

स्वर संधि के प्रकार बताइए ? = 5

① दीर्घ संधि ⇒ आ, ई, ऊ

② गुण संधि ⇒ ए, ओ, अर्

③ यण संधि ⇒ य, र, ल, व + अधूरा वर्ण

सु + आगत = स्वागत = यण संधि

④ वृद्धि संधि = ऐ, औ

⑤ अयादि संधि = य, व, र, ल + य मा ×

मात्रा

वृद्धि

जब किसी पूर्व पदान्त (अ/आ, उ/ऊ, इ/ई) तथा दूसरे पद में सजातीय स्वर (अ/आ, इ/ई, उ/ऊ) के कारण होने वाले परिवर्तन को दीर्घ संधि कहते हैं; जैसे -

विद्या + आलय = विद्यालय

आ + आ = आ

वधू + उत्सव = वधूत्सव

ऊ + उ = ऊ

वधु - a

✓ वधू - b

वधु - c

वधू - d

② गुण संधि किसे कहते हैं ⇒ ए, ओ, अर्

यदि पूर्व पदान्त (अ/आ) के पश्चात

इ/ई, उ/ऊ, ऋ तो यह क्रमशः

ए, ओ, अर् परिवर्तित हो जाते हैं; जैसे

महा + इन्द्र = महेन्द्र

आ + इ = ए

वृद्धि संधि

यदि पूर्व पदान्त (अ/आ) के पश्चात कोई असमान स्वर (इ/ई, उ, ऊ) के मेल से दोनों वर्ण क्रमशः ऐ, औ में परिवर्तित हो जाते हैं; जैसे –

एक + एक = एकैक

अ + ए = ऐ

⇒ दीर्घ संधि = आ, ई, ऊ

⇒ गुण संधि = ए, ओ, अर्

⇒ वृद्धि = ऐ, औ

यण संधि परिभाषा =

स्वर संधि के पाँच भेदों में से एक, जहाँ इ/ई, उ/ऊ अथवा ऋ के पश्चात कोई भिन्न स्वर प्रयुक्त हो, तो यह क्रमशः य, व और र परिवर्तित होते हैं; जैसे

सु + आगत

उ + आ = स्वागत

Trick = यण संधि

य
र + अधूरा वर्ण
ल
व

स्वर संधि के पाँच भेदों में से (5),

जहाँ ए/ऐ अथवा ओ/औ के

पश्चात कोई भिन्न स्वर प्रयुक्त हो,

यह क्रमशः अय्, आय् तथा अव्, आव्

में रूपान्तरित हो जाता है; जैसे-

ने + अन = नयन

य, र, ल, व + अधूरा वर्ण न आये

↓

अयादि संधि

10

स्वर -

अयादि संधि – **ए , ऐ, ओ अथवा औ** के बाद इन्हें छोड़कर जब कोई **स्वर आता है** तब **ए** के स्थान पर **अय, ओ** के स्थान पर **अव् ऐ** के स्थान पर **आय्** तथा **औ** के स्थान पर **आव्** हो जाता है ; यह अयादि संधि कहलाती है ।

1. नै + अक =

2.सै + अक =

3.गै + अन =

1. ऐ + इ = आय् + इ = आयि

2. 1. नै + इका =

3. 2. गै + इका =

भौ + उक = भावुक

नौ + इक = नाविक

भौ + इनि = भाविनी

व्यंजन संधि

व्यंजन संधि

संधि के तीन भेदों में से एक,

जहाँ व्यंजन के पश्चात स्वर या व्यंजन के पश्चात व्यंजन प्रयुक्त होने के कारण उत्पन्न विकार को व्यंजन संधि कहते हैं।

विकार ; जैसे -

- स्वर + व्यंजन
- व्यंजन + स्वर
- व्यंजन + व्यंजन

व्यंजन संधि में अक्षरों में परिवर्तन इस प्रकार होते हैं

1. यदि क्, च्, ट्, त्. प् के बाद वर्गों का तृतीय अथवा चतुर्थ वर्ण ग, घ, ज, झ, ड, ढ, द, ध, ब, भ अथवा य, र, ल, व अथवा कोई स्वर हो तो क् च्,ट् त्, प् के स्थान पर उसी वर्ग का तीसरा अक्षर ग्, ज, ड्, द्, ब् हो जायेगा। जैसे-

1. सत् + बुद्धि = सद्बुद्धि
2. वाक् + ईश = वागीश
3. जगत् + ईश = जगदीश
4. अच् + अन्त = अजन्त
5. उत् + अय = उदय
6. अच् + आदि = अजादि

2. यदि किसी वर्ग के प्रथम वर्ण (क, च्, ट, त्, प) के बाद कोई अनुनासिक वर्ण हो तो प्रथम वर्ण के बदले उसी वर्ग का अनुनासिक वर्ण (ङ्, ञ्, ण, न, म्) हो जाता है। जैसे-

Q. उत् + नति का उदाहरण कौन सा है

Q. सत् + मार्ग का उदाहरण कौन सा है

1. उत् + माद – उन्माद

2. जगत् + नाथ = जगन्नाथ

3. अप् + मय = अम्मय

4. षट् + मुख = षण्मुख

- त् या द् के बाद यदि च अथवा छ हो तो त् या द् के स्थान च् हो जाता है। जैसे–

Q. ‘सत् + चरित्र’ का उदाहरण कौन सा है

1. सत् + चरित्र = सच्चरित्र

2. उत् + चारण = उच्चारण

3. महत् + छत्र = महच्छत्र

4. सत् + छात्र = सच्छात्र

5. उत् + छेद = उच्छेद

6. सत् + चिदानन्द = सच्चिदानन्द

7. उत् + छिन्न = उच्छिन्न

त् या द् के बाद ज अथवा झ हो तो त् या द् के स्थान पर ज् हो जाता है; जैसे–

Q. उत् + ज्वल की संधि क्या होगी ?

1. सत् + जन= सज्जन

2. उत् + झटिका = उज्झटिका

3. उत् + ज्वल = उज्ज्वल

4. उत् + झटिल = उज्झटिल

5. विपद् + जाल = विपज्जाल

6. जगत् + जननी = जगज्जननी

नियम 5. त् या द् के बाद ट या ठ हो तो त् या द् के स्थान पर ट् हो जाता है। जैसे-

1. तत् + टीका = तट्टीका
2. सत् + टीका = सट्टीका
3. वृहत् + टीका = वृहट्टीका

नियम 7. त् या द् के बाद ल हो तो त् या द् के स्थान पर ल हो जाता है; जैसे–

1. तत् + लीन = तल्लीन

2. उत् + लास = उल्लास

3. उत् + लंघन = उल्लंघन

4. उत् + लेख = उल्लेख

नियम 8. त् या द् के बाद श हो तो त् या द् का च्
और श का छ हो जाता है; जैसे –

1. सत् + शास्त्र = सच्छास्त्र

2. सत् + शासन =सच्छासन

3. उत् + श्वास = उच्छवास

4. उत् + श्रंखल = उच्छृंखल

5. उत् + शिष्ट = उच्छिष्ट

9. त् के बाद ह हो तो त् के स्थान पर द् और ह के स्थान पर ध् हो जाता है। जैसे

1. उत् + हार = उद्धार
2. तत् + हित = तद्धित
3. उत् + हत = उद्धत

10. छ के पहले यदि कोई स्वर हो तो छ के स्थान पर च्छ हो जाता है। जैसे

1. आ + छादन = आच्छादन

2. परि + छेद = परिच्छेद

3. वि + छेद = विच्छेद

4. वृक्ष + छाया = वृक्षच्छाया

5. छत्र+छाया = छत्रच्छाया

11. म् के बाद यदि कोई स्पर्श वर्ण य, र, ल, व, श, ष, स, ह हो तो म् अनुस्वार में बदल जाता है अथवा अगले के वर्ग का पंचम हलन्त वर्ण आता है। जैसे-

1. सम् + लिप्त = संलिप्त
2. सम् + भव = संभव
3. सम् + सार = संसार
4. सम् + वेग = संवेग
5. किम् + वा = किंवा

विसर्ग संधि

❑ विसर्ग संधि की परिभाषा दीजिए

ओ → गुण
अर्

संधि के तीन भेदों में से एक, जहाँ विसर्ग के पश्चात स्वर या व्यंजन के प्रयुक्त होने के कारण जो विकार उत्पन्न होता है; जैसे –

मनः + रथ = मनोरथ

मनः + हर = मनोहर

नियम 1.

विसर्ग के पहले यदि 'अ' और बाद में भी 'अ' अथवा वर्गों के तीसरे, चौथे पाँचवें वर्ण, अथवा य, र, ल, व हो तो विसर्ग का ओ हो जाता है; जैसे –

मनः + बल = ?

मनोबल

लम्बोदर

पुरषोत्तम

मनोविकार

पयोद

मनः + रथ =मनोरथ

सरः + ज =सरोज

मनः + भाव =मनोभाव

पयः + द =पयोद

पयः + धर =पयोधर

वयः + वृद्ध =वयोवृद्ध

यशः + धरा =यशोधरा

सरः + वर =सरोवर

नियम 2.

विसर्ग से पहले अ, आ को छोड़कर कोई स्वर हो और बाद में कोई स्वर हो, वर्ग के तीसरे, चौथे, पाँचवें वर्ण अथवा य्, र, ल, व, ह में से कोई हो तो विसर्ग का र या र् हो जाता है। जैसे –

निः + आहार = निराहार

निः + आशा की संधि निम्न में क्या होगी ?

निः + उपाय =निरुपाय

निः + झर =निर्झर

निः + जल =निर्जल

निः + धन =निर्धन

दुः + गन्ध =दुर्गन्ध

निः + गुण =निर्गुण

निः + विकार =निर्विकार

नियम 3.

विसर्ग से पहले कोई **स्वर** हो और बाद में **च, छ** या **श** हो तो विसर्ग का **श** हो जाता है। जैसे –

निः + चल = नि**श्च**ल

निः + छल = नि**श्छ**ल

निः + चय=निश्चय

निः + छल =निश्छल

निः + शेष =निश्शेष

नियम 4.

विसर्ग के बाद यदि त या स हो तो विसर्ग स् बन जाता है। जैसे –

निः + संतान = निस्संतान

दुः + साहस = दुस्साहस

नमः + ते की संधि क्या होगी ?

नियम 5.

विसर्ग से पहले इ, उ और बाद में क, ख, ट, ठ, प, फ में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग का ष हो जाता है। जैसे –

निः + कलंक = निष्कलंक

चतुः + पाद = चतुष्पाद

निः + फल = निष्फल

नियम 6.

विसर्ग से पहले अ, आ हो **और बाद में कोई** भिन्न स्वर **हो तो** विसर्ग का लोप **हो जाता है।**

जैसे –अतः + एव –अतएव

नियम 7.

विसर्ग के बाद क, ख अथवा प, फ होने पर विसर्ग में कोई परिवर्तन नहीं होता। जैसे –

अंतः + करण = अंतःकरण

विकारी शब्द

1. संज्ञा (Noun)

अधिकांश वैयाकरण संज्ञा के पाँच भेद मानते हैं

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा
2. जातिवाचक संज्ञा
3. समूहवाचक संज्ञा
4. द्रव्यवाचक संज्ञा
5. भाववाचक संज्ञा

सर्वनाम (Pronoun)

सर्वनाम के भेद :-

सर्वनाम के प्रमुखत: छह भेद माने जाते हैं

जैसे –

1. पुरूषवाचक सर्वनाम- उसने, वह, मैं, तुम, उस
2. निश्चयवाचक सर्वनाम – यह, वह, ये, वे
3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम – कोई, कुछ, किसी
4. प्रश्नवाचक सर्वनाम- कौन, किसने, किसे, किससे, किसके
5. संबधवाचक सर्वनाम – जो, जिसने, जिसे, जिससे
6. निजवाचक सर्वनाम – आप, स्वयं, खुद, स्वत:, निज, अपना

(1) वह, तुम और मैं घुमने जा रहे हैं।

(2) तुम, मैं और वह घुमने जा रहे हैं।

(3) मैं ,तुम और वह घुमने जा रहे हैं।

(4) तुम, वह और मैं घुमने जा रहे हैं।

- अलग-अलग पुरुषों के सर्वनाम यदि एक वचन में एक ही वाक्य में लिखे जाते हैं तो वहां उन्हें 2 3 1 के क्रमानुसार लिखा जाता है

(1) हम, तुम और वे घुमने जा रहे हैं।

(2) तुम, वे और हम घुमने जा रहे हैं।

(3) वे ,तुम और हम घुमने जा रहे हैं।

(4) हम, वे और तुम घुमने जा रहे हैं।

- अलग-अलग पुरुषों के सर्वनाम यदि बहुवचनमें एक ही वाक्य में लिखे जाते हैं तो वहां उन्हें 1 2 3 के क्रमानुसार लिखा जाता है

(1) गाय, घोडा और भैंस एक घाट से पानी पी रहे हैं।

(2) गाय, घोडा और भैंस एक घाट से पानी पी रही हैं।

(3) गाय, घोडा और भैंस एक घाट से पानी पी रहा है।

(4) गाय, घोडा और भैंस एक घाट से पानी पी रही है।

- यदि किसी वाक्य में अलग-अलग लिंग के कर्ता /और /एवं/ तथा शब्दों से जुड़े हुए हो वहां क्रिया सदैव पुलिंग में प्रयुक्त होती है

(1) गाय, घोडा अथवा भैंस एक घाट से पानी पी रहे हैं।

(2) गाय, घोडा अथवा भैंस एक घाट से पानी पी रही हैं।

(3) गाय, घोडा अथवा भैंस एक घाट से पानी पी रहा है।

(4) गाय, घोडा अथवा भैंस एक घाट से पानी पी रही है।

- यदि किसी वाक्य में अलग-अलग लिंग के कर्ता /अथवा /या / व शब्दों से जुड़े हुए हो वहां क्रिया सदैवअंतिम कर्ता के लिंग व वचन में प्रयुक्त होती है

(1) मैंने कुछ पेन और पेंसिले खरीदे

(2) मैंने कुछ पेन और पेंसिले खरीदीं

(3) मैंने कुछ पेन और पेंसिले खरीदा

(4) मैंने कुछ पेन और पेंसिले खरीदी

(1) मैंने कुछ पेन अथवा पेंसिले खरीदे

(2) मैंने कुछ पेन अथवा पेंसिले खरीदीं

(3) मैंने कुछ पेन अथवा पेंसिले खरीदा

(4) मैंने कुछ पेन अथवा पेंसिले खरीदी

विशेषण

विशेषण के भेद - विशेषण के प्रमुख्त: चार भेद माने जाते हैं

1. गुणवाचक विशेषण
2. संख्यावचाक विशेषण
3. परिमाण वाचक विशेषण
4. सार्वनामिक या संकेतावाचवक विशेषण

क्रिया

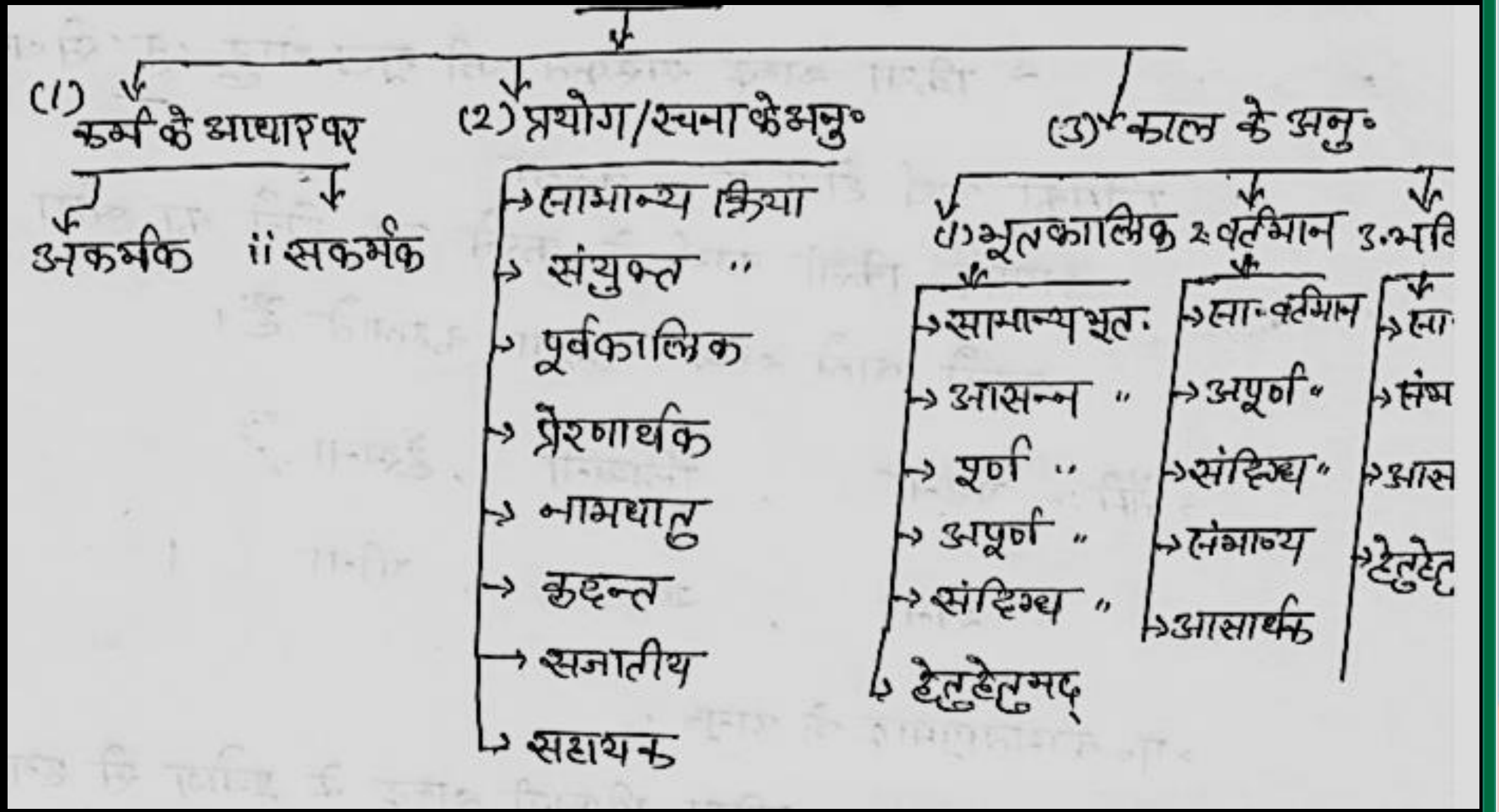
(1) कर्म के आधार पर
i अकर्मक
ii सकर्मक
(2) प्रयोग/रचना के अनु०
सामान्य क्रिया
संयुक्त "
पूर्वकालिक
प्रेरणार्थक
नामधातु
कृदन्त
सजातीय
सहायक
(3) काल के अनु०
1. भूतकालिक
2. वर्तमान
3. भवि
सामान्यभूत०
आसन्न "
पूर्ण "
अपूर्ण "
संदिग्ध "
हेतुहेतुमद्
सा० वर्तमान
अपूर्ण "
संदिग्ध "
सामान्य
आसार्थक
सा
संभ
आस
हेतुहेतु

संज्ञा (Noun)

- इस सम्पूर्ण **ब्रह्माण्ड** में जो कोई भी पदार्थ हमें अपनी आँखो से **दिखाई** देता है अथवा इसका मन से **अनुभव** किया जाता है; जैसे- पेन, कॉपी, स्कूल, छात्र, पदार्थ, महाभारत, अमीर, गरीबी इत्यादि ।

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा –

यदि कोई संज्ञा शब्द एक व्यक्ति विशेष/ स्थान विशेष/ वस्तु विशेष के नाम को ही प्रकट करता है तो उसमें व्यक्तिवाचक संज्ञा मानी जाती है।

‘यमुना’ किस प्रकार की संज्ञा है?

(क) व्यक्तिवाचक संज्ञा

(ख) जातिवाचक संज्ञा

(ग) भाववाचक संज्ञा

(घ) द्रव्यवाचक संज्ञा

‘सीमा’ किस प्रकार की संज्ञा है?

(क) जातिवाचक संज्ञा

(ख) व्यक्तिवाचक संज्ञा

(ग) द्रव्यवाचक संज्ञा

(घ) भाववाचक संज्ञा

‘भारतीय ’ किस प्रकार की संज्ञा है?

(क) जातिवाचक संज्ञा

(ख) भाववाचक संज्ञा

(ग) द्रव्यवाचक संज्ञा

(घ) व्यक्तिवाचक संज्ञा

2. जातिवाचक संज्ञा –

यदि कोई संज्ञा शब्द अपनी सम्पूर्ण जाति / समूह / वर्ग के नाम को प्रकट करता है तो उसमें जातिवाचक संज्ञा मानी जाती है।

'गाय' कौन सी संज्ञा है?

(क) व्यक्तिवाचक

(ख) जातिवाचक

(ग) भाववाचक

(ग) द्रव्यवाचक

जातिवाचक संज्ञा शब्द	हिंद महासागर, अरबसागर,
महाद्वीप / द्वीप	एशिया
महासागर / सागर	हिंद महासागर, अरबसागर,
देश / राष्ट्र	भारत, श्रीलंका, जापान
प्रदेश / राज्य	राजस्थान, पंजाब, तेलंगाना
महानगर / नगर / शहर / राजधानी	दिल्ली , जयपुर, मुंबई, बीकानेर
जिला / तहसील / गांव /	सीकर, श्रीमाधोपुर, कंचनपुर
वेद / पुराण / ग्रंथ / पुस्तक	ऋग्वेद, शिवपुराण, रामायण, कुरान

व्यक्तिवाचक संज्ञा

1. **स्त्री-पुरुषों के नाम-** राधा, गोविंद, रमेश आदि ।
2. **देवी देवताओं के नाम-**शिव, विष्णु, पार्वती, लक्ष्मी आदि।
3. **देशों के नाम** भारत, पाकिस्तान, चीन, नेपाल आदि।
4. **राज्यों के नाम-** राजस्थान, गुजरात, पंजाब, छत्तीसगढ़ आदि ।
5. **खाड़ी एवं झीलों के नाम-**बंगाल की खाड़ी, नक्की झील आदि।
6. **महाद्वीपों के नाम-**एशिया, यूरोप आदि ।
7. **ऐतिहासिक दरवाजे एवं खिड़कियों के नाम-**इंडिया गेट, अजमेरी गेट, सांगानेरी गेट, बीचली खिड़की आदि।

व्यक्तिवाचक संज्ञा

1. **दुर्ग एवं किलों के नाम**-रणथम्भौर दुर्ग, चित्तौड़ दुर्ग, चुरू का किला आदि ।
2. **भाषाओं के नाम**-हिंदी, अंग्रेजी, मराठी आदि।
3. **उपाधि एवं पुरस्कारों के नाम**- डॉक्टर, सर, गार्गी, अर्जुन आदि।
4. **सरकारी योजनाओं के नाम**-जन-धन योजना आदि।
5. **खेलों के नाम**- क्रिकेट, हॉकी, फुटबॉल आदि ।
6. **जिले, तहसील, गाँवों के नाम**-जयपुर, टोंक, मालपुरा आदि।
7. **पठार एवं मैदानों के नाम**- हाड़ौती का पठार, छप्पन का मैदान

व्यक्तिवाचक संज्ञा

1. "दिशाओं के नाम-पूर्व-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण आदि ।
2. नदियों के नाम-गंगा, यमुना, चम्बल आदि ।
3. पहाड़ों के नाम- अरावली, हिमालय आदि ।
4. समाचार पत्रों के नाम- दैनिक भास्कर, पत्रिका आदि।
5. चौकों के नाम-चाँदनी चौक आदि ।
6. 'त्योहारों के नाम- दीपावली, होली, आदि।
7. ऐतिहासिक युद्धों के नाम-बक्सर का युद्ध, हल्दीघाटी का युद्ध

जातिवाचक संज्ञा

1. पशु पक्षियों के नाम-तोता, चिड़िया, कबूतर आदि ।
2. फलों के नाम- आम, पपीता, केला आदि।
3. दैनिक उपयोगी वस्तुएँ-कुर्सी, घड़ी, कलम आदि ।
4. शरीर के अंगों के नाम-नाक, कान आदि ।
5. सामाजिक सम्बन्धों के नाम-भाई, बहन आदि ।
6. पदों के नाम-मंत्री, प्रोफेसर आदि ।

3. भाववाचक संज्ञा

एसे संज्ञा शब्द जिनको वास्तविक आँखो से तो नहीं देखा जा सकता है परन्तु **मन से जिनका अनुभव** किया जाता है वे भाववाचक संज्ञा शब्द माने जाते हैं

भाववाचक संज्ञा शब्दो की रचना किसी **जातिवाचक संज्ञा / सर्वनाम / विशेषण / क्रिया / अव्यय** शब्दो में किसी न किसी प्रत्यय के जुड़ने से होती है।

मिठास, क्रोध, लम्बाई, बचपन, प्रेम, थकावट, दोस्ती

जैसे – जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा शब्द

जातिवाचक संज्ञा + प्रत्यय	-	भाववाचक संज्ञा शब्द
1. बच्चा + पन		बच्चपन
2. युवा + अन		यौवन
3. बालक + पन		बालकपन
4. मित्र + ता		मित्रता

सर्वनाम से निर्मित भाववाचक संज्ञा शब्द –

सर्वनाम शब्द + प्रत्यय	-	भाववाचक संज्ञा शब्द
1. अपना + पन		अपनापन
2. अपना + त्व		अपनत्व
3. मम (मेरा) + ता		ममता

विशेषण शब्द से निर्मित भाववाचक संज्ञा शब्द

विशेषण शब्द + प्रत्यय	भाववाचक संज्ञा शब्द
1. छोटा + पन	छुटपन
2. बड़ा + पन/आई	बड़प्पन / बड़ाई
3. मीठा + आस	मिठास

क्रिया से निर्मित भाववाचक संज्ञा शब्द

क्रियावाचक शब्द + प्रत्यय	भाववाचक संज्ञा शब्द
1. घबर (ना) + आहट	घबराहट
2. मिल (ना) + आवट	मिलावट
3. चढ़ (ना) + आव / आई	चढ़ाव / चढ़ाई

अव्यय शब्द से निर्मित भाववाचक संज्ञा शब्द

अव्यय शब्द + प्रत्यय	भाववाचक संज्ञा शब्द
1. दूर + ई	दूरी
2. समीप + ता	समीपता
3. समीप +य	सामीप्य
4. नजदीक + ई	नजदीकी

स्वतंत्र भाववाचक संज्ञा शब्द –

कुछ भाववाचक संज्ञा शब्द एसे भी होते है जिनमें कोई प्रत्यय नहीं जुड़ा रहता है फिर भी वे शब्द किसी न किसी भाव विशेष की प्रकट करते है वे स्वतंत्र भाववाचक संज्ञा शब्द माने जाते हैं

जैसे – ‘ सुखः, दुःख , प्रेम , प्यार, दुलार इत्यादि

नोट – स्वतंत्र भाववाचक संज्ञा शब्दो में यदि कोई प्रत्यय जोड़ दिया जाता है तो उससे बना हुआ शब्द विशेषण शब्द माना जाता है

जैसे –

स्वतंत्र भाववाचक संज्ञा + प्रत्यय	विशेषण शब्द
1. सुख + ई	सुखी
2. दुःख + ई	दुःखी
3. प्यार / दुलार / आ	प्यारा / दुलारा
4. रोग + ई	रोगी

प्रश्न – ममता/ एकता शब्द में संज्ञा है?

(क) व्यक्तिवाचक

(ख) जातिवाचक

(ग) भाववाचक

(ग) द्रव्यवाचक

प्रश्न –निम्निलिखित पद मे संज्ञा है? –

ममता/ एकता आठवीं में पढ़ती हैं।

(क) व्यक्तिवाचक

(ख) जातिवाचक

(ग) भाववाचक

(ग) द्रव्यवाचक

प्रश्न – माँ की ममता अनुपम होती है
रेखांकित पद में संज्ञा है? –

(क) व्यक्तिवाचक

(ख) जातिवाचक

(ग) भाववाचक

(ग) द्रव्यवाचक

प्रश्न – व्याकरण शब्द में संज्ञा है –

(क) व्यक्तिवाचक

(ख) जातिवाचक

(ग) भाववाचक

(ग) द्रव्यवाचक

➢ संज्ञा के अन्य भेद -

- **संज्ञा के अन्य भेद** - अंग्रजी व्याकरण में संज्ञा के पाँच भेद माने जाते है उसके आधार पर हिंदी व्याकरण में भी कुछ विद्वानों के द्वारा संज्ञा के निम्नलिखित दो भेद अलग से स्वीकार किये गए है-

(a) समुदाय वाचक संज्ञा (Collective Noun)

(b) द्रव्यवाचक संज्ञा (Material Noun)

- **समुदाय वाचक संज्ञा –** एसे संज्ञा शब्द जो किसी समूह विशेष की स्थिति को प्रकट करती है उनमे समुदाय वाचक संज्ञा मानी जाती है जैसे – कक्षा, सेना, संसद, सभा, टीम, दल, मंडल, कुंज, भीड़ इत्यादि ।

- **(b) द्रव्यवाचक संज्ञा –** एसे संज्ञा शब्द जो द्रव्य / पदार्थ के किसी भी अवस्था के नाम को प्रकट करते हैं उनमें द्रव्य वाचक संज्ञा मानी जाती है-
- **(i) ठोस अवस्था –** सोना, चाँदी, जस्ता, पत्थर, लोहा इत्यादि ।
- **(ii) द्रव अवस्था –** पानी, दूध, तेल, घी, इत्यादि ।
- **(iii) गैस अवस्था –** ऑक्सीजन, हाइड्रोजन, नाइट्रोजन इत्यादि।

प्रश्न – कक्षा शब्द मैं संज्ञा है-

(a) व्यक्तिवाचक

(b) जातिवाचक

(c) द्रव्यवाचक

(d) समुदायवाचक

(a) व्यक्तिवाचक

(b) जातिवाचक

(c) भाववाचक

(d) इनमें से कोई नहीं

- **प्रश्न – पत्थर शब्द में संज्ञा है?**
- (a) व्यक्तिवाचक (b) जातिवाचक (c) द्रव्यवाचक (d) समुदायवाचक

- (a) व्यक्तिवाचक (b) जातिवाचक (c) भाववाचक (d) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न – <u>प्रेमी</u> ने प्रेमिका को पत्र लिखा। रेखांकित शब्द सही व्याकरणिक श्रेणी है ?

(a) संज्ञा (b) सर्वनाम (c) विशेषण (d) अव्यय

प्रश्न – 'प्रेमी जन तो तेने कहिए पीर पराई जाने रे। ' रेखांकित पद की सही व्याकरणिक श्रेणी है ?

(a) संज्ञा (b) सर्वनाम (c) विशेषण (d) अव्यय

व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा शब्द
1.कश्मीर	उदयपुर राजस्थान का कश्मीर है।
2. शेक्सपीअर	कालिदास भारत का शेक्सपीअर है।
3. विभिषण/ जयचन्द	मोहन तो विभीषण / जयचन्द निकला ।
4. सीता / सावित्री	भारत में आज भी घर -2 में सीता और सावित्री पाई जाती है।
5. गंगा / लक्ष्मी	राधा तो गंगा है। सरोज तो हमारे घर कीलक्ष्मी है।

सर्वनाम से क्या तात्पर्य है

सर्वनाम शब्द शब्द **सर्व** + **नाम** के योग से बना है यहां सर्व का अर्थ होता है **'सभी'** तथा नाम का अर्थ होता है **'संज्ञा'** अर्थात एसे शब्द जो सभी प्रकार की संज्ञाओं के लिए प्रयुक्त हो सकते हैं वे **सर्वनाम** शब्द कहलते हैं।

- सामान्यत: किसी भी संज्ञा शब्द के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द **सर्वनाम** शब्द कहलते हैं

जैसे – मनोज अच्छा लड़का है **वह** जयपुर मे रहता है।

प्रिया एक अच्छी लड़की है **वह** एक SI है।

सर्वनाम के भेद :-

सर्वनाम के प्रमुखत: छह भेद माने जाते हैं

जैसे -'

1. पुरूषवाचक सर्वनाम- उसने, वह, मैं, तुम, उस
2. निश्चयवाचक सर्वनाम – यह, वह, ये, वे
3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम – कोई, कुछ, किसी
4. प्रश्नवाचक सर्वनाम- कौन, किसने, किसे, किससे, किसके
5. संबधवाचक सर्वनाम – जो, जिसने, जिसे, जिससे
6. निजवाचक सर्वनाम - आप, स्वयं, खुद, स्वत:, निज, अपना

हिन्दी में कुल कितने सर्वनाम हैं?

मूलरूप से हिंदी भाषा में सर्वनामों की संख्या 11 है

जैसे -‘मैं, तू, आप, यह, वह, जो, सो, कोई, कुछ, कौन, क्या।

1. पुरूषवाचक सर्वनाम-

वे सर्वनाम शब्द जिनका प्रयोग बोलने वाले वक्ता, सुनने वाले श्रोता या किसी अन्य के लिए प्रयोग किया जाता है पुरूषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

जैसे:- मैं आगरा रहता हूँ।

वह विदेश रहता है

Note :- इसके भी पुन: तीन उपभेद कर दिये जाते हैं।

1. उत्तम पुरुष 2. मध्यमपुरुष 3. अन्य पुरुष

1. उत्तम पुरुष सर्वनाम:-

वे सर्वनाम शब्द जिनका प्रयोग बोलने वाला वक्ता अपने लिए करता है **उत्तम पुरुष वाचक** सर्वनाम कहलाते हैं।

जैसे: -

मैं आज बरसात में भीग गया ।

मुझे अपना कार्य करना है।

मेरा इन्तजार भत करना ।

प्रभुखत:- मैं, मुझे, मेरे, मुझको **(एकवचन)**

हम, हमें, हमारा, हमको **(बहुवचन)**

1. उत्तम पुरुष

उत्तम पुरुष		
कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	मैं	हम
कर्म	मुझे/ मुझको	हमें /हमको
संबंध	मेरा /मेरे	हमारा/ हमारे
मेरी	हमारी	

1. मध्यम पुरूष वाचक सर्वनाम :-

वे सर्वनाम शब्द जिनका प्रयोग बोलने वाला वक्ता श्रोता के लिए प्रयोग करता है मध्यम पुरुष वाचक सर्वनाम कहलाता है।

जैसे-

- मनीष **तू** कहाँ रहता है।
- रमेश **आप** कहाँ रहते हो ।
- **तुझे** कल ऑफिस जाना है।
- **तेरा** पुराना मित्र आया है

प्रभुखतः- तुम, तेरा, तुझको, तुम्हें, तुम्हारा, तुमको, आप

मध्यम पुरुष		
कारक	**एकवचन**	**बहुवचन**
कर्ता	तू	तुम
कर्म	तुझे /तुझको	तुम्हें/ तुमको
संबंध	तेरा/ तेरे	तुम्हारा
तेरी	तुम्हारे/ तुम्हारी	

(3) अन्य पुरुष वाचक सर्वनाम :- वे सर्वनाम शब्द जिनका प्रयोग बोलने वाले वक्ताऔर सुनने वाले श्रोता किसी अन्य व्यक्ति के लिए प्रयोग करता है। अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

प्रमुखतः- यह, वह, ये, वे, आप

- यह मेरा भाई है।
- वह तुम्हारी गाय है।
- ये हमारी घोड़िया हैं।
- वे तुम्हारी बकरियां हैं।

अन्य पुरुष

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	यह /वह	ये / वे
कर्म	इसे / इसको/उसे/उसको	इन्हें /इनको/ उन्हें /उनको
संबंध	इसका/ उसका /इसके /उसके	इनका/ उनका /इनके/उनके
इसकी / उसकी	इनकी/ उनकी	

2. निश्चयवाचक सर्वनाम

वे सर्वनाम शब्द जिनका प्रयोग किसी वस्तु के स्थान पर किया जाता है **निश्चय वाचक सर्वनाम** कहलाते हैं

प्रमुखतः- यह, वह, ये, वे

यह मेरी पुस्तक है।

वह तुम्हारा पेन है।

ये हमारी कुर्सियां है' ।

अनिश्यवाचक सर्वनाम :-

वे सर्वनाम शब्द जो किसी व्यक्ति या वस्तु का बोध नहीं करा पाते हैं। अथात् जिन सर्वनाम शब्दों से किसी व्यक्ति या वस्तु की अनिश्चयता का बोध होता है अनिश्चय वाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

प्रभुखत :- कोई, कुछ, किसी

जैसे:-

बाहर कोई खड़ा है।

भीतर कुछ पड़ा है।

यह किसी का पेन है।

सम्बंधवाचक सर्वनाम :-

वे सर्वनाम शब्द जो दो अलग-अलग बातों के स्पष्ट संबंध का बोध कराते हैं अर्थात, जिन सर्वनाम शब्दों से दो उपवाक्यों में प्रयुक्त संज्ञाओं के बीच संबंध का बोध कराने के लिए किया जाता है संबंधवाचक सर्वनाम कहलाता है।

- जो विद्वान होता है वह सदा सुखी रहता है।
- जिसकी लाठी उसकी भैंस |
- जैसी करनी वैसी भरनी ।
- जितना गुड़ डालोगे उतना मिठा होगा।
- जो बोओगे सो काटोगे।

प्रश्नवाचक सर्वनाम :

जिन सर्वनाम शब्दों के द्वारा किसी प्रश्न के करने या होने का बोध कराया जाता है प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

प्रमुखत:- क्या, क्यों, कैसे, कहाँ,

निजवाचक सर्वनाम:.

वे सर्वनाम जो किसी व्यक्ति के द्वारा स्वयं का बोध कराने हेतू प्रयोग किया जाता है। अथार्त जिन सर्वनाम शब्दों के द्वारा स्वयं किसी कार्य के करने का बोध कराया जाता है। निजवाचक सर्वनाम कहलाता है।

विशेष नियम :-

1. 'आप' शब्द में सही सर्वनाम भेद की पहचान करना – आप शब्द का प्रयोग तीन प्रकार के सर्वनामों में किया जाता है अत: सही भेद की पहचान करने के लिए निम्न तरीके काय में लेने चाहिए

(i) आप शब्द का प्रयोग 'तुम/तुम' शब्द का प्रयोग आदर के रूप में होने पर – मध्यम पुरूषवाचक सर्वनाम

(ii) 'आप' शब्द का प्रयोग 'स्वयं/खुद के अर्थ में होने पर – निजवाचक सर्वनाम

(iii) 'आप' शब्द का प्रयोग किसी अन्य व्यक्ति का परिचय करवाने के लिए होने पर – अन्य पुरूषवाचक सर्वनाम

1. आप शब्द के सर्वनाम का चयन कीजिए

प्रश्न :- निम्न मे से किस विकल्प में आप शब्द का प्रयोग मध्यम पुरूषवाचक सर्वनाम के रूप को हुआ है ?

- आप भला तो जग भल ।
- वह आप चला जाएगा।
- आप यहाँ विश्राम करें।
- तुलसीदास हिंदी के श्रेष्ठ कवि है आप अवधी भाषा पर पूर्णधिकार रखते हैं

यह/वह/ये/वे ‘ शब्दो की सही व्याकरणिक श्रेणी का पता लगाना –

इन शब्दों का प्रयोग चार प्रकार के व्याकरणिक श्रेणियों में किया जाता है

यह/वह/ये/वे ‘ शब्दो की सही व्याकरणिक श्रेणी का पता लगाना –

इन शब्दों का प्रयोग चार प्रकार के व्याकरणिक श्रेणियों में किया जाता है

(i) इन शब्दो का प्रयोग किसी व्यक्ति के स्थान पर होने पर – अन्य पुरूषवाचक सर्वनाम

- मेरा और उसका कोई संबंध नहीं है।
- वह एक ईमानदार नेता है।
- मैंने उन्हें बाज़ार में देखा था।
- वह आदमी मुझे जानता है।
- मैंने इसे दो हज़ार रूपए दिय थे।

यह/वह/ये/वे ‘ शब्दो की सही व्याकरणिक श्रेणी का पता लगाना –

(ii) इन शब्दो का प्रयोग संबधवाचक सर्वनाम के साथ योजक शब्द के रूप में होने पर – सह सबंध वाचक सर्वनाम

- **वह कौन है, जो दरवाजे पर खड़ा है?**
- **जो मेहनत करता है वह जीत जाता है।**
- **यह वही गुड़िया है जैसी तुम ने मांगी थी।**

यह/वह/ये/वे ‘ शब्दो की सही व्याकरणिक श्रेणी का पता लगाना –

(iii) इन शब्दो का प्रयोग किसी अन्य वस्तु / व्यक्ति की ओर संकेत के लिए होने पर परन्तु यह संकेतित पदार्थ इनके तुरंत बाद नहीं लिखा होने पर –

निश्चय वाचक सर्वनाम

- अरविंद अब यह चाहता है कि मैं उससे माफी मांगू।
- भीड़ ने एक बस में आग लगा दी; यह सब मैंने अपनी आंखों से देखा है।
- यह स्वेटर मेरा नहीं है।
- ये बकरियाँ रामू की है।
- यह खाना मैंने बनाया है।

यह/वह/ये/वे ‘ शब्दो की सही व्याकरणिक श्रेणी का पता लगाना –

(iv) इन शब्दो का प्रयोग ‘यहीं/वही/इन्ही/उन्ही’ के रूप में होने पर –

निश्चयवाचक सर्वनाम

यह/वह/ये/वे ‘ शब्दो की सही व्याकरणिक श्रेणी का पता लगाना –

(v) इन शब्दो का प्रयोग किसी अन्य वस्तु/व्यक्ति की ओर संकेत के लिए होने पर वह संकेतित पदार्थ इन शब्दों के तुरन्त बाद लिखा होने पर – सार्वनामिक विशेषण

- ✓ वह लड़का नहीं आया।
- ✓ इस पानी को गन्दा मत करो।
- ✓ वह पेड़ मेरे दादाजी ने लगाया था।
- ✓ इस पुस्तक को वहां रख दो।
- ✓ वह गाय दूधारू है।
- ✓ कुछ काम हो तो बताना।

प्रश्न – निम्न मेंसे किस विकल्प में वह शब्द का प्रयोग अन्य पुरूषवाचक सर्वनाम के रूप में हुआ हैं ?

- वह लड़का बहुत शैतान था। (सार्वजनिक विशेषण)
- वह आजकल दिल्ली में रहता है। (अन्य पुरूषवाचक)
- शिक्षक पुस्तकों की ओर देखकर कहा ‘‘यह लाना वह नहीं।‘‘ (निश्चयवाचक)
- जो मेहनत करता है, वह निश्चित सफल होता है (सहसंबंधवाचक)

प्रश्न – ‘यह पुस्तक वही है जो हमारे पाठ्यक्रम में है’ इस वाक्य में निश्चयवाचक सर्वनाम शब्द है?

विशेषण

विशेषण

किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले श

विशेषण कहलाते हैं

- जैसे :-
- लाल मिर्च
- हरा धनिया
- नीला गगन
- ईमानदार आदमी

प्रविशेषण -

- विशेषण की भी विशेषता बताने वाले शब्द प्रविशेषण कहलाते हैं।

विशेषण के अंग

1. उद्देश्य विशेषण/ विशेष्य विशेषण

2. विधेय विशेषण

1. उद्देश्य विशेषण -

वे विशेषण शब्द जो किसी संज्ञा या सर्वनाम के पूर्व प्रयुक्त होकर विशेषता का बोध कराते हैं उदेश्य विशेषण । विशेष्य विशेषण कहलाते हैं।

जैसे:-

- काली कमीज
- लाल रोपी

विधेय विशेषण:-

विशेष्य शब्दों के बाद प्रयुक्त होने वाला विशेषण विषय विशेषण कहलाता है

जैसे:-

- फल मीठा है।
- लड़की चतुर हैं

विशेषण के भेद - विशेषण के प्रमुख: चार भेद माने जाते हैं

1. गुणवाचक विशेषण
2. संख्यावचाक विशेषण
3. परिमाण वाचक विशेषण
4. सार्वनामिक या संकेतावाचवक विशेषण

1.गुणवाचक विशेषण –

वे विशेषण शब्द जो किसी संज्ञा या सर्वनाम के रूप, रंग, आकार, स्वभाव, दशा दिशा, गुण-दोष इत्यादि का बोध कराते हैं गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं।

- जैसे:- सुंदर बच्चा , हरी चुड़ियाँ ,गोल कमरा, दयालु औरत ,गरीब आदमी ,पश्चिमी मकान, ईमानदार लड़की,मुर्ख लोग

(2) संख्यावाचक विशेषण :-

1. निश्चित या अनिश्चित संख्या का बोध कराते हैं संख्यावाचक विशेषण वे विशेषण शब्द जो किसी कहलाते हैं

जैसे :-

1. एक लड़का, दो लड़कियाँ, तीन मोर, चार बकरियाँ, कुछ पुस्तकें, बहुत कुर्तियों, कम पेन, ज्यादा पेंसिल, कुल केले, बहुत सेव

संख्यावाचक विशेषण के 2 उपभेद

1. निश्चित संख्यावाचक
2. अनिश्चित संख्या वाचक

निश्चित संख्यावाचक :-

विशेषण वे विशेषण शब्द जो किसी निश्चित संख्या का बोध कराते हैं, निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं।

जैसे – मेरे पास हिन्दी व्याकरण की एक दर्जन पुस्तकें है (निश्चित संख्यावाचक विशेषण)

निश्चित संख्यावाचक विशेषण के उपभेद –

संख्या के लिखे जाने वाले रूप के आधार पर निश्चित संख्यावाचक विशेषण के भी निम्नानुसार अनेक उपभेद कर दिये जाते हैं-

(i) गणनावाचक विशेषण
(ii) क्रमवाचक विशेषण
(iii) आवृतिवाचक विशेषण
iv) समुदायवाचक विशेषण
(v) समुच्चयवाचक विशेषण

(i) गणनावाचक विशेषण – एक , दो , तीन, चार, पाँच, ... ।

(ii) क्रमवाचक विशेषण – पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा, ... (पुल्लिंग) ।

पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा, ... (स्त्रीलिंग) ।

प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ ..... (पुल्लिंग – तत्सम)।

प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ ..... (स्त्रीलिंग – तत्सम)।

फर्स्ट, सैकेण्ड, थर्ड, फोर्थे ..... (अंग्रेजी विशेषण)।

(iii) आवृतिवाचक विशेषण – दुगुना, तिगुना, चौगुना.....(पुल्लिंग) ।

दुगुनी, तिगुनी, चौगुनी, ... (स्त्रीलिंग)।

इकहरा, दूहरा, तिहरा, ...(पुल्लिंग) ।

इकहरी, दूहरा, तीहरी, ...(स्त्रीलिंग)।

1. हमारे विद्यालय में तीन सो पच्चास विद्यार्थी पढ़ते है
2. शिक्षक ने छात्र से कहा, ''पाँचवाँ पाठ पढो।''
3. पानी मे डूब जाने से उसका बदन फूलकर चौहरा हो गया।
4. मेरे पास तुम्हारे से चौगुनी पुस्तकें है।
5. तुम तीनों बालक कल कहाँ गये थें ?
6. विराट कोहली ने अपना उनतालीसवाँ वनडे शतक आस्ट्रेलिया के विरुद्ध लगाया था।

(ii) अनिश्चिय संख्यावाचक विशेषण :

वे विशेषण शब्द जो किसी निश्चित संख्या का बोध नहीं करा पाते हैं अर्थात, वे विशेषणशब्द जो किसी अनिश्चित संख्या के लिए प्रयुक्त किए जाते हैं"

जैसे:- थोडे, बहुत, कम, ज्यादा, कुछ इत्यादि ।

- थोडे कपड़े मेरे भी धो देना ।
- बाहर बहुत लड़के खड़े थे।
- देश में कम लड़कियां हैं
- घर में ज्यादा पशु हैं।

(3) परिमाणवाचक विशेषण :.

वे विशेषण शब्द जो किसी निश्चित या अनिश्चित माप, तौल, नाप आदि का बोध कराते हैं। परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं।

जैसे:- दो मीटर रस्सी

- तीन लीटर पानी
- थोडे चावल
- चार किलो बादाम
- कम पानी
- ज्यादा धी

परिमाणवाचक विशेषण के 2 उपभेद

(i) निश्चित परिमाणवाचक विशेषण

(ii) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण:-

(i) निश्चित परिमाणवाचक विशेषण :-

वे विशेषण शब्द जो किसी माप (तौल / नाप आदि की निश्चियता का बोध कराते हैं निश्चित परिमाण वाचक विशेषण कहलाते हैं।

(ii) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण:-

वे विशेषण शब्द जो किसी माप (तौल / नाप इत्यादि की अनिस्चियता का बोध कराते हैं अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं।

जैसे:- थोड़ा, बहुत, कम, ज्यादा, जरा सा आदि

1. पाँच लीटर दूध देना।

2. थोड़ा सा / जरा सा दूध देना।

3. बाढ़ से दस हजार टन खाद्यान्न नष्ट हो गया।

4. बाढ़ से हजारों टन खाद्यान्न नष्ट हो गया।

5. मुझे कुछ रूपये चाहिए।

6. मुझे कुछ धन चाहिए।

4. सार्वनामिक या संकेतवाचक विशेषण –

जब कोई सर्वनाम शब्द किसी पदार्थ की ओर संकेत करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है तथा वह संकेतित पदार्थ उस सर्वनाम शब्द के तुरन्त बाद लिखा रहता है तो वहाँ उसे सर्वनाम शब्द नहीं मानकर सार्वनामिक विशेषण या संकेतवाचक विशेषण माना जाता है

1. वह पुस्तक पढ़ रहा है।

2. वह बालक पुस्तक पढ़ रहा है।

3. जो पढ़ते है वे सफल होतें है।

4. जो बच्चे पढ़ते है वे सफल होतें है।

5. कौन जा रहा है।

6. कोई रो रहा है।

विशेषण के अन्य भेद –

कुछ विद्वानों के द्वारा विशेषण के निम्नलिखित दो अन्य भेद भी स्वीकार किये गये हैं-

1. व्यक्तिवाचक विशेषण

2. भिन्नतावचक विशेषण

1.व्यक्तिवाचक विशेषण :-

व्यक्तिवाचक संज्ञा का कोई शब्द जब विशेषण का रूप धारण कर ले अर्थात व्यक्तिवाचक संज्ञा से बनने वाला विशेषण व्यक्तिवाचक विशेषण कहलाता है।

स्थान	नस्ल	कंपनी के नाम
बीकानेरी रसगुल्ले	राणी गाय	एचएमटी घड़ी
राजस्थानी लोक गीत	मेरिनो भेड़	उषा पंखा
चीनी मोबाइल	मुर्रा भैंस	सैमसंग मोबाईल

1. **विशेषण की परिभाषा –** एसे शब्द जो किसी संज्ञा या सर्वनाम शब्द के विशेषता को प्रकट करते है, वे विशेषण शब्द कहलाते हैं तथा जिस संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता प्रकट की जाती है उसे विशेष्य कहा जाता है।

शब्द	विशेषण	विशेष्य
नीलगगन	नील	गगन
श्वेताम्बर	श्वेत	अम्बर
कृष्णसर्प	कृष्ण	सर्प
लाल टमाटर	लाल	टमाटर

शब्द	विशेषण	विशेष्य	विशेषण के भेद	उपभेद
1. सफेद हाथी -	सफेद -	हाथी -	गुणवाचक -	रंगबोधक
2. सुन्दर बालिका –	सुन्दर –	बालिका –	गुणवाचक –	रूपबोधक
3.छोटा मकान –	छोटा –	मकान –	गुणवाचक -	आकारबोधक
4. टूटी कुर्सी –	टूटी –	कुर्सी –	गुणवाचक –	दशाबोधक
5. पश्चिमी हवाएँ –	पश्चिमी –	हवाएँ –	गुणवाचक –	दिशाबोधक
6. भले लोग –	भले –	लोग –	गुणवाचक –	गुणबोधक
7. गंदी बस्ती –	गंदी –	बस्ती –	गुणवाचक –	दोषबोधक
8. बीकानेरी रसगुल्ले –	बीकानेरी –	रसगुल्ले –	गुणवाचक –	स्थानबोधक
9. पुराने कपड़े –	पुराने –	कपड़े –	गुणवाचक –	समयबोधक
10. कोमल शरीर –	कोमल –	शरीर –	गुणवाचक –	स्पर्शबोधक

- क्रिया

- मैंने उसे एक फ़ोन गिफ्ट दिया
- लड़की स्कूटी चला रही है
- वह जा रही है

क्रिया शब्द संस्कृत की मूल धातु ' कृ ' से बन जिसका अर्थ होता है - करना

अर्थात किसी कार्य के करने या होने का बोध कराने वाले शब्द क्रिया कहलाते हैं।

जैसे :- पढ़ना,रोना,लिखना,हँसना,पीना,खाना

क्रिया

कार्य करने का बोध

- राम पत्र **लिख रहा है।**
- लड़की स्कूटी **चला रही है**
- मित्र ने **धोका दिया**

मै एक शिक्षक **हूँ।**

गाय भुखी **थी** ।

वह मेरा मित्र **है/था।**

प० कामताप्रसाद के अनु :-

जिस विकारी शब्द के प्रयोग से हम किसी वस्तु के विषय में विधान करते हैं, क्रिया कहलाती

जैसे:-

मोहन घर नहीं जाता है

मोहन खाना खाता है

* विशेष:-

संस्कृत की मूल धातु के साथ 'ना' प्रत्यय का प्रयोग करने से क्रिया का निर्माण होता है।

जैसे:-

हँस + ना - हँसना

रो + ना - रोना

खा +ना - खाना

पिब् + ना - पीना

क्रिया का वर्गीकरण

क्रिया का वर्गीकरण प्रमुखत: तीन आधारों पर किया जाता है-

1.कर्म के आधार पर

2. काल के आधार पर

3. प्रयोग/रचना के आधार पर

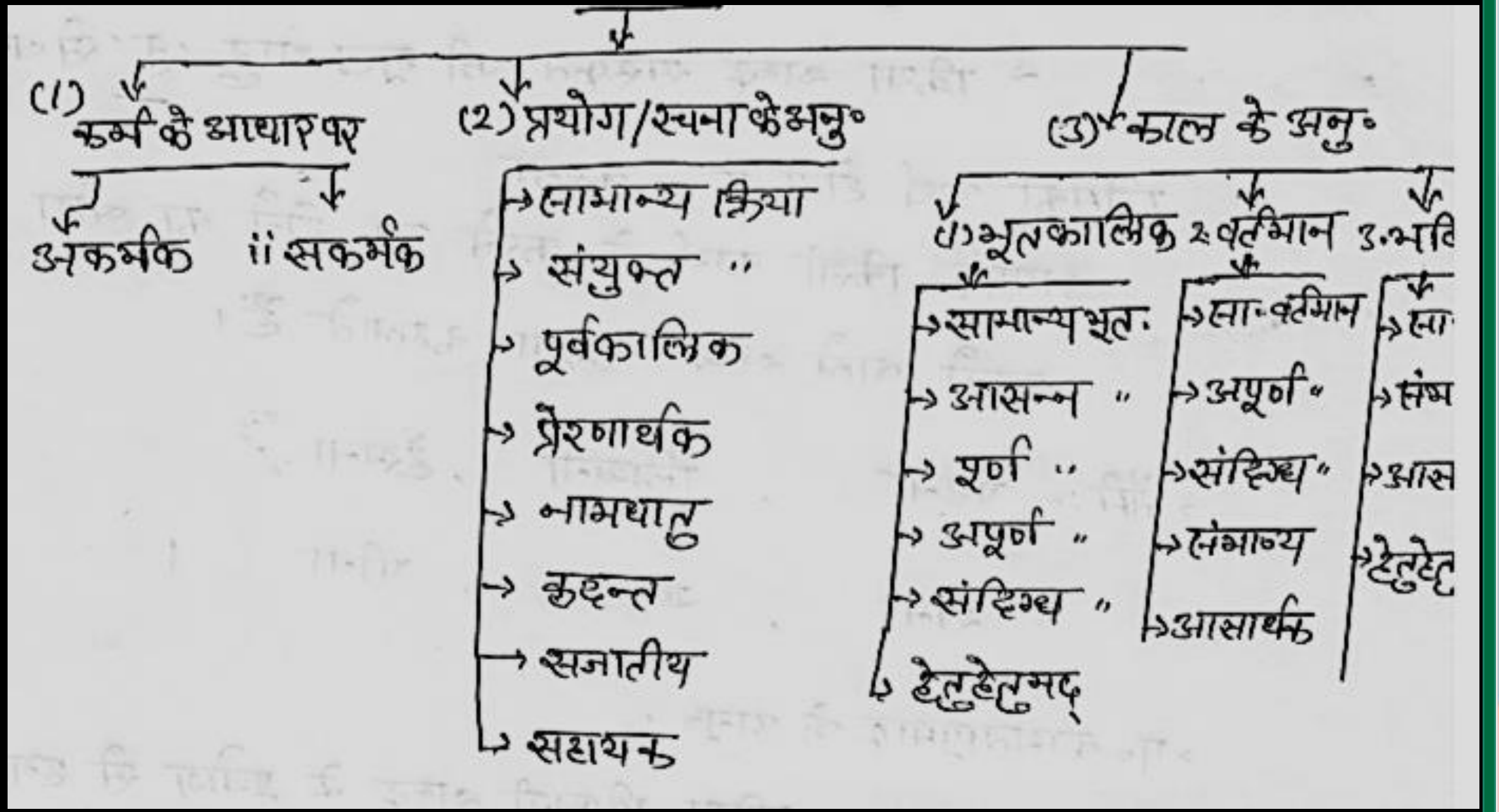
(1) कर्म के आधार पर
i अकर्मक
ii सकर्मक
(2) प्रयोग/रचना के अनु०
सामान्य क्रिया
संयुक्त "
पूर्वकालिक
प्रेरणार्थक
नामधातु
कृदन्त
सजातीय
सहायक
(3) काल के अनु०
1. भूतकालिक
2. वर्तमान
3. भवि
सामान्यभूत०
आसन्न "
पूर्ण "
अपूर्ण "
संदिग्ध "
हेतुहेतुमद्
सा० वर्तमान
अपूर्ण "
संदिग्ध "
सामान्य
आसार्थक
सा
संभ
आस
हेतुहेतु

अकर्मक क्रिया

वह बहुत चतुर निकला । /वायुयान हवा में उड़ता है।

राकेश का भाई बहुत बेईमान है।/चिड़ियाँ आकाश में उड़ती है।

राकेश स्वस्थ है।

गाड़ी दिखाई देती है।

सूरज निकला।

बच्चा खेलता है।

अकर्मक क्रिया

जब किसी वाक्य में क्रिया का फल पर पड़े। अर्थात जब किसी वाक्य में कर्ता और क्रिया बिना कर्म के प्रयुक्त होकर भी पूरे अर्थ का बोध कराए अकर्मक क्रिया कहलाती है।

जैसे -

मैं एक अध्यापक हूँ/था।

वह मेरा मित्र है/था।

राधा एक अच्छी लड़की है/थी।

विशेष नियम:-

यदि किसी वाक्य में प्रयुक्त कोई क्रिया स्वत: (अपने आप) संपादित हो रही हो तो वह सदैव अकर्मक क्रिया ही मानी जाती है।

- पेड़ से पता गिरता है।
- बूंद-बूंद से घड़ा भरता है।
- उसका सिर खुजला रहा है।
- रस्सी ऐंठती है।

नोटः-

यदि इस प्रकार की क्रियाओं के साथ कर्ता कारक भी लिख दिया जाता है तो वहाँ इनको अकर्मक नहीं मानकर सकर्मक ही माना जाता है जैसे-

- बच्चा पेड़ से पता गिरता है।
- किसान बूंद बूंद से घड़ा भरता है।
- रमेश अपना सिर खुजला रहा है।
- बालिका रस्सी ऐंठती है।

(2) सकर्मक क्रिया :-

रवि पीता है.

रवि पानी पीता है.

महेश पत्र लिख रहा है.

रमेश चाय पी रहा है.

(2) सकर्मक क्रिया :-

जब वाक्य में प्रयुक्त क्रिया कर्म के सहित हो अर्थात् कर्ता और क्रिया, कर्म के साथ प्रयुक्त होकर पूरे अर्थ का बोध कराए सकर्मक क्रिया कहलाती है।

जैसे:-

लड़की स्कूटी चला रही है ।

गीता गाना गाती है।

सकर्मक क्रिया के 2 उपभेद

- एककर्मक क्रिया
- द्विकर्मक क्रिया

एककर्मक क्रिया :-

जब किसी वाक्य में क्रिया के साथ एक कर्म प्रयुक्त हो तो एककर्मक क्रिया कहलाती है

जैसे:- →

पिता पुत्र को पीटता हैं।

रवि क्रिकेट खेलता है।

द्विकर्मक/ बहुकर्मक क्रिया : .

जब किसी वाक्य में क्रिया के साथ दो या दो से अधिक कर्म प्रयुक्त हो हो द्विकर्मक क्रिया कहलाती हैं।

जैसे-

लड़की पक्षियों को दाना डालती है।

अध्यापक छात्रों को पुस्तक पढ़ाता है।

- द्विकर्मक क्रिया की पहचान के लिए वाक्य में प्रयुक्त क्रिया से क्या और किसने दोनों से प्रश्न किया जाता है। यदि दोनों का उत्तर मिले तो क्रिया द्विकर्मक होती है।

- यदि किसी वाक्य में देने का बोध हो रहा हो और दान दिया जा रहा हो तो क्रिया द्विकर्मक न होकर एककर्मक होती है।

पिता पुत्र को शिक्षा देता है।
माता पुत्री को ज्ञान देती हैं।

भाई बहन को सौ रुपये उधार देता है। (द्विकर्मक)
अजय विजय को सौ रुपये देता है। (एक क्रर्मक)
अजय विजय को सौ रुपये उधार देता है। (द्विकर्मक,

(2) प्रयोग / रचना के आधार पर क्रिया - 8 भेदः-

1. सामान्य क्रिया
2. नामधातु क्रिया
3. संयुक्त क्रिया
4. कदन्त क्रिया
5. पूर्वकालिक क्रिया
6. सजातीय क्रिया
7. प्रेरणार्थक क्रिया
8. सहायक क्रिया

सामान्य क्रिया –

जब किसी वाक्य में एक ही धातु से बने हुए किसी अकेली क्रिया का प्रयोग किया जाता है तो वहाँ वह सामान्य क्रिया मानी जाती है।

- बच्चा घर गया।
- वह पत्र लिखेगा।
- हमने नाटक लिखा।

(2) संयुक्त क्रिया :-

जब दो या दो से अधिक भिन्नार्थक क्रियाएं मिलकर नवीन क्रिया का निर्माण करती है संयुक्त किया कहलाती हैं।

रमेश पत्र लिख रहा है। (लिखना+रहना+होना)

बच्चा दूध पीता है। (पीना+होना)

मैं अंग्रेजी बोल सकता हूँ। (बोलना+सकना+होना)

मोहन क्या कर रहा है

(3) पूर्वकालिक क्रिया :-

जब किसी वाक्य में दो भिन्नार्थक क्रियाएं प्रयुक्त हों और दोनों ही कार्य के होने का बोध कराए उनमें से जो क्रिया पहले सम्पन्न होती हैं पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है।

जैसे :-

बच्चा दूध पीकर सो गया ।

वह थप्पड़ मार के चली गई।

(4) प्रेरणार्थक क्रिया :-

जब किसी वाक्य में कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी और को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है तो वहाँ प्रेरणार्थक क्रिया होती है।

सीमा रीमा से खाना पकवाती है।

- सोहन मोहन से पत्र लिखवाता है।

मूल/सामान्य क्रिया	प्रेरणार्थक क्रिया	द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया
रोना (अकर्मक)	रूलाना (सकर्मक)	रूलवाना (सकर्मक)
सोना (अकर्मक)	सुलाना (सकर्मक)	सुलवाना (सकर्मक)
भागना (अकर्मक)	भगाना (सकर्मक)	भगवाना (सकर्मक)
धोना (सकर्मक)	धुलाना (अकर्मक)	धुलवाना (सकर्मक)
खाना (सकर्मक)	खिलाना (अकर्मक)	खिलवाना (सकर्मक)
सुनना (सकर्मक)	सुनाना (अकर्मक)	सुलवाना (सकर्मक)

नामधातु क्रिया –

सामान्यत: प्रत्येक क्रिया की रचना किसी न किसी धातु से होती है परन्तु जब कोई क्रिया किसी धातु से नहीं बल्कि किसी 'संज्ञा के /सर्वनाम से /विशेषण से' बना दी जाती है तो वह नामधातु क्रिया कहलाती है।

संज्ञा से निर्मित नाम धातु –

बात – बतियाना

लात – लतियाना

लाज – लजाना

सर्वनाम से निर्मित नामधातु –

अपना – अपनाना

विशेषण से निर्मित नामधातु –

गर्म (गरम) – गर्माना (गरमाना)

साठ – सठियाना

कृदंत क्रिया-

जब किसी किया या मूलधातु प्रत्यय का प्रयोग किया जाए, तो उससे बनने वाली क्रिया कृदंत क्रिया कहलाती है।

चल +ना - चलना

चल +ता - चलता

(7) सजातीय क्रिया :-

जब किसी वाक्य में एक ही मूल धातु से दो क्रियाओं का निर्माण हो तो वह सजातीय क्रिया कहलाती है।

भारत ने पाकिस्तान से लडाई लड़ी

पटेल ने एल. एल. बी की पढाई पढ़ी |

अमन ने एवरेस्ट की चढ़ाई चढी ।

(8) सहायक क्रिया

मुख्य क्रिया की सहायता करने वाली क्रिया **सहायक क्रिया** होती है।

- राधा पढ़ती है।
- सीता ने अपना सामान बिस्तर पर रख दिया है।
- गीता आ रही है।
- वान्या गाना गा रही है।
- सविता सो रही है।

काल के अनुसार किया 3 प्रकार

1. **भूतकालिक क्रिया-** क्रिया के जिस रूप के द्वारा बीते हुए समय में किसी कार्य के होने का बोध हो

2. **वर्तमान कालिक क्रिया** क्रिया के जिस रूप के द्वारा जारी समय किसी कार्य के होने का बोध हो

3. **भविष्यकालिक -** क्रिया के जिस रूप के द्वारा आने वाले हि समय अचात् भविष्य में किसी कार्य के होने का बोध है

भूतकालिक क्रिया

1. सामान्य भूतकालिक क्रिया - बच्चे घर गये।
2. आसन्न भूतकालिक क्रिया - बच्चे घर गये हैं।
3. पूर्ण भूतकालिक क्रिया - बच्चे घर गये थे।
4. संदिग्ध भूतकालिक क्रिया- बच्चे घर गये होंगे।
5. अपूर्ण भूतकालिक क्रिया -बच्चे खेल रहे थे।
6. हेतुहेतुमद भूतकालिक क्रिया – यदि तुम पढ़ते तो सफल हो जाते।

(i) वर्तमान कालिक क्रिया

1. सामान्य वर्तमान कालिक क्रिया - वह पुस्तक पढ़ता है।
2. अपूर्ण वर्तमान कालिक क्रिया - पूजा पूजा कर रही है।
3. संदिग्ध वर्तमान कालिक क्रिया - बच्चे सो रहे होंगे।
4. आज्ञार्थक वर्तमानकालिक क्रिया - खड़े हो जाओ।
5. सम्भाव्य वर्तमानकालिक क्रिया – शायद पिताजी आये होंं।

(i) वर्तमान कालिक क्रिया

1. सामान्य भविष्यतकालिक क्रिया –बच्चे क्रिकेट खेलेंगे।
2. आज्ञार्थक भविष्यतकालिक क्रिया - आप अपनी पढ़ाई कीजिएगा।
3. संभाव्य भविष्यतकालिक क्रिया - वे शाम को यहाँ आ सकते हैं।